संदेश

'हिंदी दिवस' के अवसर पर आप सबको मेरी हार्दिक शुभकामनाएं। प्रत्येक वर्ष की भांति आज एक बार फिर यह दिन हमें राजभाषा हिंदी के प्रति अपना कर्त्तव्य बोध करा रहा है। हिंदी न केवल राजकाज की भाषा है, अपितु हमारे राष्ट्रीय स्वाभिमान का भी प्रतीक है। इसी कारण स्वाधीन भारत की संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इसी उपलक्ष में प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर का दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। आम बोलचाल की भाषा के रूप में हिंदी सबसे आगे है और यह संपर्क भाषा का स्थान ग्रहण कर चुकी है। किंतु राजभाषा के रूप में हम आज भी हिंदी में काम करने में संकोच करते हैं। जैसाकि मैंने पहले भी अपने साप्ताहिक संदेश में कहा है - सतत एवं अथक प्रयास ही सफलता की कुंजी है। इसलिए यदि हम हिंदी में काम करने का दृढ़ निश्चय करके सतत प्रयास करेंगे तो अवश्य हम अपना दैनिक कामकाज हिंदी में करने में सफल हो सकेंगे।

हमारी पत्रिका सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रमों की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका है, हिंदी में काम करने के लिए हमारे कार्मिकों को हर तरह की तकनीकी और प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध है।

हमारे कार्मिक हिंदी में उत्कृष्ट कोटि का साहित्यिक और तकनीकी लेखन कर रहे हैं। न केवल लेख और काव्य, अपितु तकनीकी पुस्तकें भी लिख रहे हैं और पुरस्कार प्राप्त कर रहे हैं। हमारे निगम में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए इंटरनेट का पूरा-पूरा उपयोग किया जा रहा है, पीएफसी की शब्दावली, संक्षिप्त वाक्य, मानक फॉर्म/प्रपत्र सभी इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। केवल पत्राचार और नोटिंग-ड्राफ्टिंग में निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए हमें थोड़ा प्रयास और करना है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस क्षेत्र में अपने प्रयासों से आप पीएफसी को 'सर्वश्रेष्ठ' उपक्रम का स्थान दिलाएंगे।

इस संदेश की सार्थकता तभी है जब इसे पढ़कर इस पर अमल भी करें और राजभाषा हिंदी के प्रति अपने संवैधानिक व नैतिक दायित्व का निर्वाह करें।

सतनाम सिंह

(सतनाम सिंह)